ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
An International Multidisciplinary Research e-Journal

सामाजिक यथार्थ और उसके उपागम

पियुषा सोमदेव पंचोली

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research e-Journal

सारांश

समाजशास्त्र के अध्यायन में पिछले कुछ दशकों में विज्ञानवादिता पर आवश्यकता से अधिक बल दिया गया। उसी के सन्दर्भ में समाजशास्त्र में सामाजिक यथार्थ को समझने के लिये एक नवीन परिप्रेक्ष्य का उदय हुआ। इस परिप्रक्ष्य के समर्थक समाजशास्त्रियों ने उन वर्गो, व्यक्तियों एवं समूहों के अध्ययन पर जोर दिया जो, काफी समय से उपेक्षित रहे हैं तथा जिन्हें व्यवस्था द्वारा कोई संरक्षण नहीं मिल पाया है। इस नवीन परिप्रेक्ष्य के अनुयायियों में गारफिंकल, लेसर, स्ट्रास जोवर्ग तथा नेट आदि प्रमुख है। इस परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत यह भी माना जाने लगा है कि समाजशास्त्र मानवीय दशा के अनुरुप एवं प्रासंगिक होना चाहिये। मानवी के द्रष्टिकोण में विश्वास करने वाले विद्वानों का कहना है कि ''मनुष्य समाज के लिये सामाजिक प्राणी नहीं है, बल्कि समाज प्राणी के लिए है।''

सामाजिक यथार्थ को समझने के लिये मानवी की परिप्रेक्ष्य की कुछ प्रमुख विशेषतायें होती है जो इस प्रकार से समझी जा सकती हैं जैसे कि –

- मानवी की परिप्रेक्ष्य में इस तथ्य पर बल दिया जाता है कि सामाजिक यथार्थ स्थिर नहीं है, बल्कि उसे निर्मित और पुनःनिर्मित किया जा सकता हैं। इस कार्य को वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य अपनाकर नहीं बल्कि मानवी की परिप्रेक्ष्य अपनाकर ही सम्पन्न किया जा सकता है।
- मानवी की परिप्रेक्ष्य में उपेक्षित वर्ग, शोषितवर्ग, महिलाओं आदि के अध्ययन को ही समाजशास्त्रीय ज्ञान का सही प्रतिमान माना गया है।
- मानवी की परिप्रेक्ष्य में सामाजिक यथार्थ को ठीक से समझने के लिये वस्तुनिष्ठ अध्ययन के बजाय विषयनिष्ठ अध्ययन पर अधिक बल दिया जाता हैं क्योंकि वस्तुनिष्ठ अध्ययन में प्रत्येक प्रकार की सामाजिक घटना का सभी पहलुओं से अध्ययन करना सम्भव नहीं है। इसी कारण इस परिप्रेक्ष्य में सामाजिक यथार्थ के अन्तर्निहित अर्थ या बोध को महत्वपूर्ण माना गया है।
- मानवी की परिप्रेक्ष्य प्रत्यक्षवाद, वैज्ञानिकवाद, रुपनुभविकता तथा गणनात्मक तथ्यों आदि पर अधिक जोर दिये जाने विरोध स्वरुप ही अस्तित्व में आया है। यह परिप्रेक्ष्य वैज्ञानिक पद्धति की कठोरता का आलोचक हैं।

मानवीकी परिप्रेक्ष्य में सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों या पूर्व स्थापित मान्यताओं से अध्ययनकर्ता अपने आपको दूर रखता है जिससे कि नव–निर्मित सामाजिक यथार्थ का निष्पक्षता से अध्ययन और विश्लेषण किया जा सके।

सामाजिक यथार्थ के अध्ययन के प्रमुख उपागम :

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA
An International Multidisciplinary Research e-Journal

1. प्रत्यक्षवादी उपागम :

समाजशास्त्र के कुछ महत्वपूर्ण संस्थापकों का विश्वास था कि मानव समाज का अध्ययन उन्हीं सिद्धांतो और पद्धतियो के आधार पर किया जा सकता है, जिनका प्रयोग प्राकृतिक विज्ञानों – रसायनशास्त्र, जीवशास्त्र, भौतिकशास्त्र आदि में किया जाता हैं। संक्षेप में, इस पद्धति या उपागम को ही प्रत्यक्षवाद के नाम से जाना जाता है। ऑगस्ट कॉम्टे, जो समाजशास्त्र के जन्मदाता हैं, का मानना है कि जिस प्रकार प्राकृतिक विज्ञानो में पदार्थ के व्यवहार को कारण एवं प्रभाव के आधार पर समझा जा सकता है उसी प्रकार मानव के व्यवहार एवं सामाजिक यथार्थ को भी कारण एवं प्रभाव अर्थात, कार्यकारण सम्बन्ध के आधार पर समझा जा सकता हैं। मान्यताओं के आधार पर देखें तो

- मनुष्य का व्यवहार भी पदार्थ के व्यवहार के समान वैषविकता के आधार पर मापा जा सकता है।
- जिस प्रकार पदार्थ के व्यवहार को वजन, ताप, दाब आदि के आधार पर मापा जा सकता है, ठीक उसी प्रकार मानव व्यवहार को मापनेमें भी वैषयिक पद्धतियाँ अपनायी जा सकती है।
- प्रत्यक्षवादी उपागम में उस व्यवहार पर विशेष बल दिया जाता है जिसे प्रत्यक्ष रुप से अवलोकित किया जा सकता है।

2. नृजातीय (लोकविधि विज्ञान) उपागम :

नृजातीय उपागम समाजशास्त्र में सामाजिक यथार्थ को समझने के लिये एक नवीनतम उपागम है। इस उपागम द्वारा समाजशास्त्र में कई परम्परागत विचारधाराओं के विपरीत मत प्रकट किया गया है। गारकिंकल ने अपनी पुस्तक 'स्टडीज इन एपनोमेथडोलॉजी' में इस उपागम को व्यवस्थित रुप में प्रस्तुत किया। यह उपागम समाजशास्त्र में सामाजिक यथार्थ को समझने में नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इसमें सामाजिक यथार्थ का निष्पक्ष और प्रत्यक्ष रुप में अध्ययन सम्भव है। यह उपागम मानवीय व्यवहार के उन पक्षों के अध्ययन पर अधिक बल देता है जो व्यक्ति के जीवन की दिन–प्रतिदिन की सामान्य क्रियाओं से सम्बन्धित हैं। जिसमें तीन पक्षों का अध्ययन किया जाता है।

(1) दिन–प्रतिदिन की सामान्य क्रियायें

(2) भाषा का सामाजिक पक्ष और

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA
An International Multidisciplinary Research e-Journal

(3) सामाजिक प्रतिमानों का वह पक्ष जोकि व्यक्ति अपने व्यवहार में काम में लेता है।

नृजातीय पद्धति की सहायता से सामाजिक यथार्थ को अधिक उत्तमता के साथ समझा जा सकता है।

3. प्रघटनाशास्त्र :

सामाजिक प्रघटना को समझने हेतु प्रघटनाशास्त्र दर्शन का सहारा लेता है। इस उपागम में प्रघटना की विषय वस्तु एवं अध्ययनकर्ता को अलग–अलग बताया गया है और कहा गया है कि ये दोनों एक नहीं है। इस उपागम में अनुभवों को निम्न दो प्रकार से समझने का प्रयत्न किया गया है। –

(1) सम्मिलिख अनुभव

(2) विशिष्ट अनुभव

प्रथम प्रकार के अनुभव सम्मिलित अनुभवों के आधार पर सामान्यीकरण करते हैं जबकि द्वितीय प्रकार के अनुभव, जिन्हे विशिष्ट या अद्वितीय अनुभव कहा जाता है, विषयमें यह उपागम समझता है कि ये अनुभव प्रत्येक व्यक्ति के पृथक–पृथक होते है। इस उपागम में किसी सामाजिक प्रघटना के अध्ययन के लिये जड़मति रुपान्तरण पर बल दिया जाता है। अस उपागम के अनुसार समाजिक प्रघटना का अध्ययन उस रुप में किया जाना चाहिए, जिस रुप की कोई विशिष्ट पहचान किसी स्थिति या परिस्थिति अथवा संरचना विशेष की वजह से होती हो। यदि सामाजिक प्रघटना को स्थिति, परिस्थिति या संरचना विशेष से पृथक कर दिया जाये तो उसका रुप ही परिवर्तित हो जाता है फिर उस सामाजिक प्रघटना की पहचान ही कठिन हो जायेगी।

4. आमूल परिवर्तनवादी उपागम :

आमूल परिवर्तनवी उपागम प्रमुख रुपसे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रभाव से उत्पन्न सामाजिक स्थिति के विरोध के कारण उत्पन्न हुआ है। यह उपागम व्यवस्था का विरोधी एवं परिवर्तन का समर्थक है। आमूल परिवर्तनवादी विचारधारा है। 1967 में अमेरिकन सोशियोलॉजिकल एसोसियेशन की वार्षिक बैठक में उभरकर समाने आयी युद्ध या संघर्ष ही आमूल परिवर्तनवी विचारधारा का आधार है। इस बैठक में यह स्पष्ट किया गया कि आमूल परिवर्तनवादी उपागम के माध्यम से परिवर्तन सम्भव है। इस विचारधारा के समर्थकों का कहना था कि समाजशास्त्र में शोषित, उपेक्षित, दलित या कमजोर वर्ग के लोगों के अध्ययन पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिएं क्योंकि इस वर्ग के लोगों को कभी भी व्यवस्था का संरक्षण नहीं मिला इन लोगों का अध्ययन करके समाजशास्त्र ज्ञान का सही उपयोग कर सकता है। आमूल परिवर्तनवादी विचारधारा के समर्थक अमेरिकी जहाँ समाज में होने वाली भेदभावों तथा सब प्रकार के शोषण के विरुद्ध अपनी आवाज उठाते रहे हैं, वहीं इस

विचारधारा ने विद्यार्थियों, मित्रो तथा बुद्धिजीवियों को बहुत अधिक प्रभावित किया है। इसी कारण से मानवी की परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत आमूल परिवर्तनवादी उपागम का बहुत अधिक महत्व माना गया है।

5. प्रतीकात्मक अन्तःक्रिया :

प्रतीकात्मक अन्तःक्रिया मानीवय क्रिया का ऐसा स्वरुप हैं जिसमें कुछ संकेतो, प्रतीकों, चिन्हों, आदि का उपयोग किया जाता है। इस उपागम में व्यक्ति अथवा समूह की भाषा, हाव–भाव या भाव–भंगिमाओं का संचार एवं पारस्परिक अन्तःक्रिया का प्रमुख आधार माना जाता है। इसमें भाषा के व्याकरण या शब्द कोष में उल्लेखित अर्थ को महत्व न देकर सामाजिक पक्ष पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इस उपागम में भाषा के सामाजिक पक्षको समझने पर बल दिया गया है। प्रतीकात्मक अन्तःक्रियावाद सामाजिक यथार्थ को समझने का एक सैद्धान्तिक दृष्टिकोण है जो सामाजिक अन्तःक्रियाओं के अध्ययन पर बल देता है। इस उपागम में अमूर्त सामाजिक संरचनाओं के स्थान पर मानवीय व्यवहारों के मूर्त स्वरुपों अन्तःक्रिया की प्रकृति, सामाजिक क्रिया एवं सामाजिक संबंधों के गतिशील पक्षों के अध्ययन पर बल दिया जाता हैं।

अतः मानवीय परिप्रेक्ष्य वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य का विरोधी परिप्रेक्ष्य है। इसमें वैज्ञानिक पद्धति के अति संयम और नैतिक निष्पक्षता पर ध्यान न देकर दिन–प्रतिदिन को छोटी–छोटी घटनाओं पर ध्यान दिया जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में उपेक्षित एवं शोषित लोगों तथा समाज के कमजोर वर्गोंके अध्ययन पर बल दिया जाता है क्योंकि इन वर्गों के लोगों के अध्ययन के बिना समाजशास्त्रीय ज्ञान अधूरा ही रहेगा। इस परिप्रेक्ष्य की सहायता से ही सामाजिक यथार्थ उद्घाटित हो सकता है। इसमे सहभागिक अवलोकन पद्धति अर्थात् घटनाओं में अध्ययनकर्ताओं के योगदान का विशेष महत्व है।

VIDHYAYANA

** ** **